

LOK SABHA DEBATES

Vol. LV

First Day of the Fifteenth Session
of the Fifth Lok Sabha

No. 1

LOK SABHA

Monday, January 5, 1976/Pausa 15 1897
(Saka)

*The Lok Sabha met at fifteen minutes past
Twelve of the clock.*

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

ANNOUNCEMENT RE. RESIGNATION
BY DR. G. S. DHILLON FROM THE
OFFICE OF THE SPEAKER

MR. DEPUTY-SPEAKER: I have to
inform the House that Dr. G. S. Dhillon
has resigned the office of the Speaker of
Lok Sabha on the 1st December, 1975 at
7 A.M.

MEMBER SWORN

SHRI S. K. RAI (Sikkim)

12.16 hrs.

PRESIDENT'S ADDRESS

SECRETARY-GENERAL: I beg to lay
on the Table a copy of the President's Address
to both Houses of Parliament assembled
together on the 5th January, 1976.

President's Address

माननीय सदस्यगण,

मैं बहुत खुशी से आप सब का स्वागत
करता हूँ, खास कर सिक्किम के नुमाइन्दों
का जो मई 1975 में भारतीय यूनियन का
22वां राज्य बना। सरकार की यह
कोशिश होगी कि इस पिछड़े पहाड़ी राज्य
का तेजी से विकास हो।

2. पिछले साल, सरकार की मजबूत
कार्रवाई की वजह से अर्थ-व्यवस्था में
अच्छे नतीजों का जिक्र करते हुए मैं आपका
ध्यान कुछ जमातों को उन कोशिशों की
तरफ भी दिलाया था जो मौजूदने निजाम
और संस्थाओं को छिन्न-भिन्न करना चाहती
थीं जिसे देश की तरक्की और पायेदारी
को खतरा पैदा हो गया था। मैंने
उनसे अपील की थी कि तबदीलियां गाने
के लिए वे वात-चीत का रास्ता अपनायें
और सुधार के लिए तजवीजों का स्वागत
किया था। मुझे अफसोस है कि इस अपील
पर कोई तवज्जो न दी गई। कुछ जमातें
और ऐसे लोग, जिनके विचार एक दूसरे
से बिल्कुल अलग थे, देश के आर्थिक और
राजनीतिक जीवन में रुकावट डालने के
लिए आपस में मिल गये। उन्होंने लोगों के
मन में गलतफहमी पैदा करने और बदनामी
फैलाने के लिए हर मौके का गलत फायदा
उठाना चाहा। उनकी इन कार्रवाइयों
से देश को अन्दरूनी सलामती बड़े खतरे में
पड़ गई थी। उनका मकसद था कि किस
तरह आर्थिक अपराध रोकने, पैदावार
वढ़ाने और बढ़ती हुई इन्फ्लेशन पर काबू
पाने, माल को सही ढंग और तेजी से एक
जगह से दूसरी जगह पहुंचाने, अर्थ-व्यवस्था
को पायेदार बनाने और लोगों को राहत
पहुंचाने के लिए सरकार की जोरदार
कोशिशों को नाकाम बनाया जाये। देश
के हित में कड़ा और फैसलाकुन कदम उठाना
लाजमी हुआ।

3. 25 जून, 1975 के इमरजेंसी
के एलान, 1 जुलाई, 1975 की 20 सूत्री

प्राथिक प्रोग्राम की घोषणा और कौमी जिनदगी के सभी क्षेत्रों में, कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए उठाये गए कदमों से राष्ट्र के जीवन पर नुमाया असर पडा। मायूसी और बेहिमी की जगह जो एतमाद पैदा हुआ उसमे हमें मरसूम हुआ कि अगर हममें एकता और डिमिगलिन हा प्रा? अपनी शक्ति को जाया न होने दे तो हम अपनी समस्याओं को कामयाबी में तद कर सकते हैं। जनता ने सरकार द्वारा उठाये गये कदमों की भरपूर तारीफ की है और देश की फिता में आई हुई तबदोली का स्वागत किया है। इससे उत्साहित हो कर सरकार ने बहुत से मामलों में फैसलाकुन कार्रवाई की है। इन्प्लेशन पर ताबू टा लिया गया है। सितम्बर 1974 में बहु। बड़ी हुई कीमतों के मुकाबले में अब श्रीसनन दम फी मदी गिरावट आई है और खान पाने की चीजा की कीमतों में तबरीवन 20 फी मदी बर्मा हुई है। प्राथिक आपाधा के पिलाफ कड़ी कार्रवाई की गई है। 1973 में और 1974 के शुरु म कोयला, घिजती, इस्पात और सोमेट जैसी चीजों की बमी और ट्रामपोर्ट सिस्टम में गडबडी और खराब कार कर्दगी स हमारे अर्थ व्यवस्था को काफी नुकसान पहुंचा था। इस साल उत्पादन बढ़ा है और इन सभी क्षेत्रों के काम में नुमाया सुधार हुआ है। मजदूरों के सहयोग से कुछ का छोड कर सभी उद्योगों में शान्ति रही है। हमारे इकत्तादी हालत में जो बहुत से डिस्टार्गन्स और इन्वलेमिज पंदा हो गये थे उनमें सुधार हुआ है। इसकी वजह से कुछ तबको के जो विशेषाधिकार थे उनमें बमी हुई है। लेकिन यह याद रखना चाहिए कि कोई भी तबका अलग रह कर सिर्फ अपने ही हितों को नहीं बढ़ा सकता है। हर एक तबके की भलाई का दारोमदार मजदूर इकत्तागी मजदूरी पर ही है।

4. गरीबों की बहबूदी के प्रोग्रामों में एक नई जान डाली गई है। जिन लोगों के पास फर्मिन नहीं है उन्हें घर बनाने के लिए जमीन दिलाने, भूमि सुधार लागू करने, खेती बाडी पर काम करने वालों की मजदूरी बढ़ाने और कर्ज में राहत दिलाने के काम तेजी में आगे बढ़ते जा रहे हैं।

5. गरीबों का हल थोड अरों में नहीं निकाला जा सकता। लगातार कड़ी मेहनत और जिनदगी के सभी शोबा में डिमिगलिन में ही हमें तबदोली लानी जा सकती है। इसलिए पिछले कुछ महीनों में जो नया जोश पैदा हुआ है उसमें बमी नहीं आनी चाहिए और उस जारी रखना है।

6. 20 सूची प्राथिक प्रोग्राम पर पूरी लगन से अमल किया जायेगा। सरकार जनता का पूरा सहयोग चाहती है, क्योंकि यह जनता का प्राग्राम है और उस सिर्फ सरकारी एजेसिया से ही नहीं चलाया जा सकता।

7. इस साल जैसा खरीफ की पसल पहले बमी नहीं हुई। अनाज की ज्यादा से ज्यादा बसुनी की जागी ताकि किसान प्रोकोमोट प्रागम में कम पर अनाज बेचने पर मजबूर नहो और साथ ही साथ तागहानी जरूरत के लिए हमारे पाम काफी स्टोक हो।

8. हम चाहते हैं कि 1979 के पहले ही और 50 लाख हैक्टेयर की सिंचाई का इन्तजाम हो सके। राज्यों के आपसी झगडों की वजह से कई प्रोजेक्टों को शुरू करने में देरो हुई है। सरकार इस उमूल को मनवाने को कोशिश करेगी कि पानी राष्ट्रीय सम्पत्ति है जिसका इस्तेमाल देश के बेहतरीन फायदे के लिए होना चाहिए।

नदी घाटियों के मास्टर प्लान को तैयार करने के लिए एक नेशनल वाटर रिसोसिंस कौन्सिल काफी इच्छा रात के साथ कायम की जाएगी। इस अर्थ में, सम्बन्धित राज्यों को एक साथ ला करके, ज्यादा से ज्यादा अगड़ों को नय करने की तेजी से कोशिश की जा रही है। इसी कोशिश का नतीजा है कि नर्मदा घाटी के कुछ प्रोजेक्ट, बेतवा नदी पर राजघाट प्रोजेक्ट और माही नदी पर कदाना प्रोजेक्ट के सम्बन्ध में सम्झौते हो गये हैं। हाल ही में, गोदावरी नदा के पानी के अधिकांश भाग के इन्तेमाल के सम्बन्ध में पाच राज्यों के बीच हुआ सम्झौता, राज्यों के दम्यान पानी के अगड़ों को वानचीत के जरिये हल करने का दिशा में एक अहम कदम है। गोदावरी घाटी देश के रकबे का दमवा हिस्सा है और इस समझौते में पचास लाख हेक्टेयर जमीन की मिर्चाई करने के प्रोजेक्ट बनाने में मदद मिलेगी।

9. इस साल मालाना योजना के लिए पिछले साल के मुकाबले में 25 फी सदी ज्यादा का प्रावधान है। प्राथमिक क्षेत्रों पर जोर का ध्यान देते हुए 25 अगले साल और बढ़ाया जायेगा ताकि विकास की तहरीक में और तेजी आये। साथ ही साथ कपड़े और चीनी जैसे उद्योगों को, जो जनता की आम जरूरतों को पूरा करते हैं और जिनकी मशीनें पुरानी हो चुकी हैं, जदीद बनाने के लिए कदम उठाये जायेंगे।

10. सनभती लाईसेंसिंग की पालिसी और उसके काम करने के तरीकों पर फिर से गौर किया जा रहा है। आर्थिक शक्ति को कुछ ही हाथों में जमा होने पर रोक-थाम लगाने की नीति का पालन करते हुए, प्राथमिक क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ाने और नई सनभतों को बढ़ावा देने की खातिर ऐसे कण्ट्रोल हटा दिए जायेंगे जिनकी अब जरूरत नहीं है।

11. पिछले 3 सालों की अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक घटनाओं की वजह से हमारे बेलेंस आफ पेमेंट्स पर भारी बोझ पड़ा है। इकलमादी हालत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए निर्यात में काफी इजाजा जरूरी है। निर्यात बढ़ाने के लिए हाल ही में कई कदम उठाये गए हैं। हंडलूम और दरतकारी की चीजों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकारों की मदद में खाम कदम उठाये जायेंगे। एकावटों और कमियों को दूर करने के लिए नीति और काम के तरीकों पर गौर किया जायेगा।

12. इन्तजामी कार्यकुशलता को बेहतर बनाने की कोशिशों को जारी रखा जायेगा और इसे बढ़ाया जायेगा। हमारे इन्तजाम के तरीकों और नजरियों में ज्यादा तबदीली नहीं हुई है, खास तौर से माली इन्तजाम में, जिनका अमर सरकार के सभी क्षेत्रों की कार कर्दगी पर पड़ता है। सरकार ने माली इन्तजाम में सुधार लाने की एक मुकामिल योजना तैयार करने का फैसला किया है, जिसे पर इस साल से अमल होगा। यूनियन का हिसाब-किताब आडिट से अलग करके डिपार्टमेंट्स के सुपुर्द किया जाएगा। तनखाह और पैन्शन की अदायगी, प्रॉविडेंट फंड का हिसाब किताब रूपया जमा करने, निकालने और खर्च की मंजूरी के नियमों और तरीकों को आसान और जदीद बनाया जाएगा। कर्मचारियों के काम करने के तरीकों का जायजा लेने के ढग को बदलना होगा ताकि हर सतह पर एडमिनिस्ट्रेशन अपनी कार कर्दगी के बारे में जवाबदेह और रिजल्ट-ओरिएन्टिड हो।

13. चेक का जड़ से दूर करना सेहत के क्षेत्र में एक बड़ी कामयाबी है। यह बया दौबारा न हो, इसके लिए कड़ी निगरानी रखी जा रही है। छूत की दूसरी बिमारियों के खिलाफ भी मुहिम तेज की जा रही है।

14. हम कोशिश कर रहे हैं कि अगले तीन सालों में जन्म दर घट कर 30 फी हजार आ जाये। इस मकसद को हासिल करने के लिए, फीमिली प्लानिंग प्रोग्राम को जन-आन्दोलन का रूप लेना होगा। इन्सेटिव और डिसेन्सेटिव की नई स्कोमें तैयार की जा रही हैं, ताकि छोटे परिवारों की मकसूलियत में इजाफा हो।

15. दूसरे देशों की तरह हमने भी 1975 को अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में मनाया। बहुत से क्षेत्रों में महिलाओं के मामलों का तकसील से अध्ययन किया गया है। महिलाओं को बराबर काम के लिए बराबर उजरत दिलाने का आडिनेन्स इस सेशन में आपके सामने आया महिलाओं के लिए एक राष्ट्रीय योजना तैयार की जा रही है, जिसके अमल से उन कमियों को दूर करने में मदद मिलेगी जिनकी वे शिकार हैं।

16. पहले सेटलाईट "आर्यभट्ट" के निर्माण पर स्पेस माईटिस्ट्स और इन्जिनियर्स को मैं बधाई देता हूँ। देहात की जनता के हित में साइन्स और टेक्नालौजी को अमली तौर से इस्तेमाल में लाने के लिए सेटलाईट इस्ट्रक्शनल टेलिविजन एक्सपेरिमेंट की कामयाबी एक नुमाया कदम है। इस तर्जुबे से हम टेलिविजन को गांव में जन-सम्पर्क के माध्यम के रूप में इस्तेमाल करने के बारे में तय कर सकेगे।

17. अनर्जी के नए जरियों के विकास की अहमिनियत को मान लिया गया है और कई क्षेत्रों में काम को तेज किया जा रहा है। बायो-गैस और मोलर अनर्जी के इस्तेमाल को ज्यादा तरजीह दी जा रही है।

18. अब मैं दूसरे देशों के साथ अपने सम्बन्धों के बारे में जिक्र करूंगा।

19. हमारा यह पक्का विश्वास है कि इस उप-महाद्वीप के सभी देशों में सामान्य और दोस्ती के तालुकात अबाय की तरफकी लिए जरूरी हैं।

20. बंगला देश में हाल की घटनाओं से हमें दुःख और चिन्ता हुई। शेख मुजीबुर-रहमान, उनके परिवार और साथियों की बेरहमी से हत्या का हमें बड़ा दुःख और गहरा सदमा पहुंचा। फिर भी, हमने बंगलादेश की घटनाओं को उस देश का अन्दरूनी मामला समझा है। इस लिये, कुछ हल्कों में, जो गलत प्रचार किया जा रहा है, उससे हमें बहुत दुःख है। दोनों देशों के नुमाइन्दों के बीच हाल की बातचीत में हमने इस बात पर जोर दिया है कि हम सीमा पर शांति चाहते हैं और यह भी कि बंगलादेश पायेदार और स्वतंत्र रहे जहां सभी तबके के लोगों के हित और कल्याण की रक्षा हो। बंगलादेश ने अपनी नीति बनाये रखने और अपनी जनता को, चाहे वह किसी भी जाति, मजहब या धर्म में तालुक रखती हो, समान अधिकार देने का ख्वाहिश पर जोर दिया है।

21. मुझे दुःख है कि शिमला समझौते पर अमल को रफतार धीमा रही है, क्योंकि पाकिस्तान का नया निराशाजनक रहा है जो कि भारत को गलत तन्वीर पेश करने की अपनी मुहिम जारी रखे हुए है।

22. भूटान के साथ दाम्नी के हमारे पुराने सबध और बढ़ रहे हैं और मजबूत हो रहे हैं। बूखा पनविजली प्रोजेक्ट का काम शुरू होने से आर्थिक सहयोग का प्रोग्राम बहुत आगे बढ़ा है।

23. 1975 में नेपाल के महामहिम नरेश और महारानी की भारत यात्रा से उस मित्त पडोसी देश के साथ हमारे सबंध और मजबूत हुए हैं; उनकी यात्रा के दौरान जो बातचीत हुई, उस का नतीजा यह निकला कि नेपाल से

भारत से बहने वाली नदियों के पानी के इस्तमाल के बारे में ब्राह्मी फायदे का बेहतर अन्दाजा हुआ है।

24. श्रीलंका के साथ हमने अनौपचारिक बातचीत और आपसी हित के मामलों में सहयोग की परम्परा को और मजबूत किया है। बर्मा के साथ हमने अपने आर्थिक, सांस्कृतिक और विज्ञान सबंधों को तालुका बढ़ाया है।

25. हमने दक्षिण पूर्व एशिया तथा जापान और पूर्व एशिया के दूसरे देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने की कोशिश की है। हिन्द-चीन में बहुत दिनों से चली आ रही लड़ाई खत्म होने पर हमें खुशी हुई और हमने उस समझौते का स्वागत किया, जिसके मुताबिक वियतनाम के दोना इलाके फिर से एक दूसरे से मिल गये। हमारा विश्वास है कि री-युनाईटेड वियतनाम और पापेदार और आर्थिक लिहाज से मजबूत कम्बोडिया और लाओस दक्षिण पूर्व एशिया में शांति और इन्तहायाम का बाईसा होंगे। मैंने मार्च, 1975 में इन्डोनेशिया की यात्रा की और पाया कि इन्डोनेशिया और भारत के बीच आपसी हित का आर्थिक, मनश्रुती और टेकनालो-जिकल सहयोग का फायदा का अहसास बढ रहा है।

26. ताराखी और सगतिव ममानती और मौजूदा मसला पर ए। जैसे नजरिये के आधार पर अफगानिस्तान के साथ हमारे करीबी और दोस्ताना तालुका है। हमें खुशी है कि टैक्नीकल और आर्थिक सहयोग के प्रोग्राम में अच्छी तरक्की हो रही है।

27. ईरान के साथ ए। दूसरे के नजरिये को बेहतर समझने और आपसी हित के मामलों में हमारे आदान प्रदान बढे और फैले। खुदरेमुख आयरन और प्रोजेक्ट के विकास के लिये समझौते पर दस्तखत होना इस सिविलिले से एक नयाया कदम है।

28. अरब देशों के साथ आर्थिक, तिजारती और सांस्कृतिक संबंध बढ रहे हैं। मिस्र अरब गणराज्य और सूडान यात्रा से मुझे पश्चिम एशिया की समस्याओं को और गहराई से समझने का मौका मिला है। सरकार अपने इस विश्वास पर जोर देती है कि जब तक ताकत के जोर से कब्जा की हुई अरबों की जमीन को खाली नहीं किया जाता और फिलिस्तीनियों को उनके जाइज हक वापिस नहीं दिये जाते, तब तक पश्चिम एशिया में पापेदार अमन कायम नहीं हो सकता।

29. मोजाम्बिक, अगोला, केप वर्डे, सन तोम और प्रिमिपे को सदियों पुरानी पुर्तगाली कलोनियलिज्म से आजादी हासिल करने पर हम बधाई देते हैं साथ ही साथ कमोरोस, सूरीनाम और पपुआ न्यू गिनी के स्वतंत्र होने का हम स्वागत करते हैं।

30. हम अगोला के अन्दरूनी मामलों में दक्षिण अफ्रीका की हथियारबन्द मदाखलत की निन्दा करते हैं। भारत ने अफ्रीका एकता सगठन का बगबर समर्थन किया है और अपार्थाईड को खत्म करने, नमीबीया को आजाद कराने, जिम्बाबवे और दक्षिण अफ्रीका में माईनोरेटी रूल खत्म करने की सभी कोशिशों में भारत अफ्रीका का साथ देगा।

31. मोवियत संध तथा पूर्वी यूरोप के देशों के साथ भारत के संबंध गहरी दोस्ती समझ-बुझ और बढ़ते हुए क्षेत्रों में आपसी हित में सहयोग की बुनियाद पर कायम हैं। इन देशों ने सभी अहम मामलों में भारत का हमेशा समर्थन किया है। पिछले महीना में कई बडे नुमाइन्दे एक दूसरे के देश गये और मैंने हगरी और यूगास्लाविया की यात्रा की।

32. यूरोप में सुरक्षा व सहयोग सम्मेलन की कामयाबी पापेदार शांति की तरफ एक अहम कदम है। तनाव कम करने की यह भावना

दुनिया के उन देशों में भी फजनी चाहिए जहाँ झगड़ा और तनाव अब भी है। ई०ई०सी० और पश्चिम यूरोप के दूसरे देशों के साथ व्यापार और साइंस टेक्नोलोजी के क्षेत्रों में हमारे आर्थिक सहयोग और संबंध बड़ रहे हैं।

33. हम चाहते हैं कि यू० एस० ए० के साथ हमारे संबंध पक्के और घमल पज़ीर हों। शांति, पायेंदारी और सहयोग को मजबूत बनाने के लिए एक दूसरे के विचारों को समझने की पूरी कोशिश की जानी चाहिए।

34. नान-एलाइन्ड देशों के राज्याध्यक्षों का अगला सम्मेलन इस साल अगस्त में श्री लंका में होगा। हमें खुशी है कि नान-एलाइन्ड को व्यापक रूप में मान्यता मिली है। लेकिन साथ ही कुछ ऐसी कोशिशें भी की जा रही हैं कि नान-एलाइन्ड मुवमेन्ट कमजोर और धीमी हो। हम गुटों में दूर रहने के बनावदी उमूलों और नान-एलाइन्ड देशों की एकता और प्रभाव बनाये रखने के लिए कोशिशें करते रहेगे।

35. दुनिया की अर्थव्यवस्था की सबसे खटकने वाली बात यह है कि इस पर कुछ अमीर देश हावी हैं और सारा बोज़ गरीब और विकासशील देशों को सहना पड़ना है। ज्यों ज्यों समय गुजरता है, इन देशों की समन्याये और भी कठिन होती जा रही है। इस रुख को जल्दी बदलना होगा और ऐसे उपाय करने होंगे जिन में दुनिया में एक नयी अर्थव्यवस्था तायम हो सके। यू०एन० जनरल असेम्बली के सातवें विशेष अधिवेशन में सबका इरंफाव ताय होना आपसी बातचीत की गरुअत में एक कदम है। अनर्जी, कच्चे माल और सनअती पैदावार की कीमते मकर करने के लिए और गरीब देशों के आर्थिक विकास की समन्याओं का उचित हल निकालने की गरज से हमने अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग पर पैरिस सम्मेलन में तामीरी हिस्सा लिया। हमें उम्मीद है कि सभी सम्बन्धित अंतर्राष्ट्रीय मंचों में कार्रवाई के लिए जल्द से जल्द ठोस समझौते हो जायेंगे।

36. माननीय सदस्यगण, अंतर्राष्ट्रीय स्थिति में, खास कर हमारे सब-कॉन्टिनेंट और पड़ोसी देशों में गैर यकीनी हालत का होना देश में विघटनकारी शक्तियों की चुनौती का जारी रहना और सामाजिक और आर्थिक प्रोग्रामों को तेज करने की जरूरत मानते हुए राष्ट्र को चौकस और अनुशासित रहना होगा। कार्य कुशलता बढ़ाने और राष्ट्रीय जीवन के हर क्षेत्र में तबदीली और सुधार लाने की लगातार कोशिश जारी रहनी चाहिए।

37. खत्म करने से पहले मैं चाहता हूँ कि चासनाला कोयला खान के दर्दनाक वाक्या, जिसकी मिसाल नहीं मिलती, का जिक्र करूँ जिससे सारे देश में गहरा रज छा गया है। खान से पानी निकालने का काम जारी है। बहुत से दोस्त मुल्क और देश में कई सस्थायें इस काम में मदद पहुंचाने के लिए आगे आई हैं। जिन परिवारों पर इस दुर्घटना से मुमीबन आई है उनकी तकलीफें दूर करने और खान मजदूरों की सुरक्षा के उन्पान में सुधार लाने के लिए सरकार कोई दकीका वाकी न रखेगी।

38. आपका यह अधिवेशन मरुम्बर होगा, लेकिन इसका एजेण्डा भारी है। पिछले मेसन के बकाया मामलों तथा आर्डिनन्सों को पार्लियामेंट के एक्टों में बदलने के अलावा आपको इस अधिवेशन में पेश किये जाने वाले अर्थन लैण्ड सम्बन्धी बिल पर विचार करना है। ऐसा वक्त है कि एक मिनट भी जाया नहीं किया जा सकता। मुझे यकीन है कि आप साफ, माहमपूर्ण और मजबूत रहनुमाई करेगे, जिनकी जनता आपसे आशा रखती है। मैं आपको इन अहम कामों का शुरू करने की दावत देता हूँ और आपकी सफलता की कामना करता हूँ।

जय हिन्द।

HONOURABLE MEMBERS :

It gives me great pleasure to welcome you all and particularly to have in our midst the representatives of Sikkim, which became the 22nd State of the Indian Union in May, 1975. It will be the endeavour of Government to ensure speedy development of this neglected hill State.

2. Last year, while noting the positive trends in the economy arising out of the firm measures taken by Government. I drew attention to the efforts of some groups to disrupt the existing system and institutions and the danger this posed to the stability and progress of our country. I appealed to them to follow the path of discussion to bring about changes and welcomed suggestions for reform. It is most unfortunate that this appeal was not heeded. Groups and elements of widely differing persuasions joined together to paralyse the country's economic and political life. They clutched at every opportunity to create confusion in the minds of the people and to foment chaos and disorder. Their activities seriously threatened internal security. They were directed towards undermining Government's vigorous efforts to curb economic offences, increase production and ensure the smooth and speedy movement of goods in order to stem the rising tide of inflation, stabilise the economy and bring relief to the people. The nation's interests demanded firm and decisive action.

3. The declaration of emergency on June 25, 1975, the 20-point Economic Programme launched on July 1, 1975 and the steps taken to tone up efficiency in all spheres of national life have had a dramatic effect on the health of the nation. Diffidence and apathy have given place to confidence that we can face our problems successfully if we are disciplined and united, and do not allow our energies to be frittered away. Our people have given overwhelming support to the steps taken by the Government

and have welcomed the change in the atmosphere in the country. Strengthened by this decisive action has been taken by the Government on a wide front. Inflation has been checked. The over-all price level has come down by 10% when compared to the peak level reached in September, 1974, the fall in the price level of food articles being nearly 20%. Stringent action has been taken against economic offences. Shortage of coal, power, intermediate goods like steel and cement and the dislocation and inefficient working of the transport system had severely strained the economy during 1973 and early 1974. This year production has increased and performance improved significantly in all these sectors. With the co-operation of workers, industrial peace has been maintained, save in a few isolated cases. Several distortions and imbalances that had developed in the economy have been corrected. As a result of this, the privileges enjoyed by some groups have been reduced. But it should be remembered that no single group can further its interests in isolation. The interests of each group are dependent on the soundness of the economy as a whole.

4. New vigour has been imparted to the implementation of programmes for the uplift of the poor. Rapid progress is being made in allotment of house sites to the landless, implementation of land reforms, increasing agricultural wages and giving relief from debts.

5. The problem of poverty cannot be solved in a short time. We can make a dent in it only through sustained hard work and discipline in all walks of life. The new spirit that has been generated over the last few months should therefore be maintained unimpaired.

6. The 20-point Economic Programme will continue to be implemented with zeal. Government invites the full co-operation of the people as it is a people's programme and cannot be implemented by official agencies alone.

7. We have a record kharif crop this year. The maximum quantity of grain will be procured so that farmers will not have to sell below the procurement price and in order to have sufficient stocks to meet any unforeseen eventuality.

8. We aim to extend irrigation to five million more hectares before 1979. Disputes between States have delayed a number of projects. Government will try to get acceptance of the concept of water as a national asset to be utilised to the best advantage of all the people. A National Water Resources Council with adequate powers, to prepare master plans for river basins will be constituted. Meanwhile, efforts have been intensified to settle as many disputes as possible by bringing the concerned States together. As a result, agreements have been reached regarding some projects in the Narmada basin, the Rajghat project on the Betwa river and the Kadana project on the Mahi river. The recent agreement amongst five States on the utilisation of a major portion of the waters of the Godavari River is a landmark in the settlement of inter-State water dispute by negotiations. The Godavari basin covers a tenth of the area of the country and the agreement will enable the construction of projects to irrigate five million hectares of land.

9. The outlay on the annual plan this year is 25% higher than last year's. This will be further increased next year with emphasis on priority sectors so that the impulses of growth are quickened. Simultaneously, steps will be taken to ensure the modernisation of industries like textiles and sugar, which are engaged in the production of mass consumption goods and have been suffering from obsolescence and sickness.

10. Industrial licensing policies and procedures have been under review. Controls which are no longer relevant will be removed to increase production in priority

areas and widen the entrepreneurial base, consistent with the objectives of curbing the concentration of economic power.

11. International economic events of the last three years have imposed severe strain on our balance of payments. A big increase in exports is essential to achieve a self-reliant economy. Several measures have recently been initiated to promote exports. Special steps will be taken with the assistance of State Governments, to increase exports of handlooms and handicrafts. A review of policies and procedures is being made so as to remove constraints and obstructions.

12. Measures to improve administrative efficiency will continue and will be expanded. Our administrative procedures and attitudes have remained largely unchanged, specially in the field of financial administration which affects the working of all wings of Government. Government has decided upon a comprehensive scheme of reform of financial administration, which will be put through this year. The maintenance of accounts of the Union will be departmentalised and separated from Audit, Rules and procedures for payment of salaries and pensions, maintenance of provident fund accounts, remittance and withdrawal of moneys, and for sanction of expenditure will be simplified and modernised. Methods of evaluation of performance will have to be changed in order to make the administration at every level result-oriented and accountable.

13. A major achievement in the field of health is the eradication of small pox. Strict vigil is being kept against the recurrence of this scourge. The campaign against other communicable diseases is being intensified.

14. We are aiming to reduce the birth rate to 30 per thousand in the next three years. To achieve this, the family planning programme will have to become a mass

movement. New schemes of incentives and disincentives are being evolved to increase the acceptance of a small family.

15. Along with other countries, we observed 1975 as International Women's Year. The problems faced by women in a number of areas have been studied in detail. The Ordinance guaranteeing to women equal remuneration for equal work will come before you this session. A National Plan for Women is being prepared, the implementation of which will help to remove some disabilities from which they suffer.

16. I congratulate our Space scientists and engineers on the construction of our first Satellite, Aryabhata. The successful working of the Satellite Instructional Television Experiment is a landmark in the practical application of science and technology for the benefit of the rural population. This Experiment will help us to decide on the use of television as a means of mass communication in rural areas.

17. The importance of developing new sources of energy has been recognised and work is being intensified in a number of areas. Bio-gas plants and the utilisation of solar energy are being given high priority.

18. I shall now deal with our relations with other countries.

19. We remain firm in our conviction that normal and friendly relations between all the countries of the sub-continent are essential for the progress of their peoples.

20. Recent events in Bangladesh have caused us anguish and concern. We were shocked and grieved by the brutal assassination of Sheikh Mujibur Rahman, the members of his family and his associates. Nevertheless, we have treated developments in Bangladesh entirely as an internal affair of that country. We are therefore distressed by the false propaganda that is being carried on in some quarters. In recent talks between representatives of

the two countries, we have reaffirmed our desire for a peaceful border and a stable, strong and independent Bangladesh in which the interest and welfare of all sections of its people are safeguarded. Bangladesh emphasised its desire to continue the policy and ensuring equal rights to all its people, irrespective of caste, creed and religion.

21. I regret that the progress of implementation of the Simla Agreement has been slow because of disappointing response from Pakistan, which has continued a campaign of misrepresentation of India.

22. Our traditional bonds of friendship with Bhutan are growing. The programme of economic co-operation has taken a giant stride with the starting of work on the Chukha hydro-electric project.

23. Relations with our friendly neighbour, Nepal, were further strengthened by the visit to India of their Majesties the King and Queen in 1975. As a result of the discussions held during the visit, there is better appreciation of the mutual advantages of a joint approach to the utilisation of waters of the rivers flowing into India from Nepal.

24. With Sri Lanka we have strengthened the tradition of informal and mutually beneficial exchanges and collaboration on matters of common interest. We have improved our economic, cultural and scientific links with Burma.

25. We have sought to strengthen our relations with our neighbours in South East Asia as well as with Japan and other countries of East Asia. We rejoiced at the ending of the prolonged hostilities in Indo-China and have welcomed the negotiations leading to the reunification of the two Zones of Vietnam. We believe that a reunited Vietnam and a stable and economically strong Cambodia and Laos will constitute forces for peace and stability in South-East Asia. I visited Indonesia in

March, 1975, where I found a growing awareness of the possibilities and mutual advantages of increased economic, industrial and technological co-operation between Indonesia and India.

26. We have close and friendly ties with Afghanistan, based on historical and cultural affinity and on similarity of approach to current problems. We are gratified that programmes of technical and economic co-operation are making good progress.

27. Our understanding and mutually beneficial exchanges with Iran have grown and become more varied. An important landmark in this process has been the signing of agreements for the development of the Kudremukh Iron Ore Project.

28. Economic commercial and cultural contacts with the Arab countries continued to make progress. My visit to the Arab Republic of Egypt and the Sudan gave me deeper insight into the problems of West Asia. Government reaffirms its belief that lasting peace in West Asia will not be achieved until Arab territories seized by force are speedily vacated and the legitimate rights of the Palestinian people restored.

29. We greet Mozambique, Angola, Cape Verde, Sao Tome and Principe on their achievement of independence from centuries of Portuguese colonialism. We also welcome the emergence to independence of Comoros, Surinam and Papua New Guinea.

30. We cannot but condemn armed intervention by South Africa in the internal affairs of Angola. India has steadfastly supported the organisation of African unity and will join with Africa in all measures to end apartheid, to liberate Namibia and to end racist minority rule in Zimbabwe and South Africa.

31. India's relations with the Soviet Union and countries in Eastern Europe

are characterised by a spirit of warm friendship, understanding and mutually beneficial co-operation in a widening variety of fields. These countries have consistently supported India on all issues of vital concern. In the last few months, a number of high level visits have been exchanged and I visited Hungary and Yugoslavia.

32. In Europe, the successful conclusion of the conference on Security and Co-operation marks an important step in the consolidation of peace. This spirit of detente should extend to other parts of the world where conflict and tension persist. Our economic co-operation as well as relations in the field of trade and science and technology with the E.E.C. and other countries of Western Europe has continued to expand.

33. We desire a mature and constructive relationship with the United States of America. A serious effort should be made to understand each other with a view to strengthening peace, stability and co-operation.

34. The next conference of Heads of State and Government of non-aligned countries will be held in Sri Lanka in August this year. We are glad that the validity of non-alignment has come to be recognised more widely. At the same time attempts are being made to weaken and dilute the non-aligned movement. We shall continue to strive to preserve the fundamental principles of non-alignment and the solidarity and effectiveness of non-aligned countries.

35. The most striking feature of the world economy is dominance by a small number of rich countries. The developing poor countries bear the brunt of the burden. As each year passes, the problems of these countries become more acute. This trend must be reversed urgently and steps taken to establish a new world economic order. The consensus reached at the seventh special session of the United Nations General Assembly marks the beginning of a dialogue.

In the Paris Conference on International Economic Co-operation, we contributed constructively in an effort to evolve equitable solutions to the problems of energy, the pricing of raw materials and industrial products and of the economic development of poor countries. We hope that concrete agreements for action will be reached in relevant international forums as early as possible.

36. Honourable Members, in view of the uncertainties of the international situation, especially on our sub-continent and the neighbourhood, the continuing challenge of forces of disruption at home and the need to accelerate our social and economic programmes, the nation should remain vigilant and disciplined. There must be constant effort to improve performance and bring about changes and reforms in every sphere of national life.

37. Before concluding, I should like to refer to the unprecedented tragedy in Chasnala Colliery, which has plunged the whole nation in deep sorrow. The work on clearing the mine of the flooded water is in progress. Several friendly countries and a number of organisations within the country have come forward to assist this operation. Government will spare no efforts to mitigate the sufferings of the affected families and to improve conditions of safety for workers.

38. Your present session will be a short one, but the agenda is heavy. In addition to pending business from the last session and the conversion of Ordinances into Acts of Parliament, you have to consider the bill on urban land, which will be introduced during the session. There is not a minute to waste. I am sure you will provide the clear, bold and firm lead which the people expect. I summon you to your labours and wish you all success. [Jai Hind.]

12.16½ hrs.

OBITUARY REFERENCES

MR. DEPUTY-SPEAKER : Hon. Members, we meet today after nearly five months. During the interregnum, it is my sad duty to inform the House, death overtook one of our dear colleagues, a sitting member of this House, Shri K. Kamraj, and also six former colleagues, Shri K. R. Achar, Dr. V. Subramaniam Prof. K. K. Bhattacharya, Shri Mathew Maniyangadan, Sardar Teja Singh Akarpuri and Shri B. Shiva Rao.

Shri Kamraj passed away in Madras on 2nd October, 1975. A great national leader and an eminent Member of this House representing Nagercoil constituency of Tamil Nadu, Shri Kamraj had a long Parliamentary career. He was first elected to the Madras Assembly in 1937 and re-elected in 1946, 1952, 1957 and 1962. He had also been a Member of the Constituent Assembly during the years 1946-50, of First Lok Sabha during the years 1952-54 and of the Fourth Lok Sabha during the years 1969-70. He entered the political arena at an early age and suffered imprisonment during the Salt Satyagrah Movement and again in 1932, 1941, 1942 and 1945 in connection with various National movements. He was Chief Minister of Madras during 1954-63. A man of few words but fully dedicated to the tasks undertaken by him, he rose from the ranks to positions of high eminence in the national life through hard work, dedication and unbounded faith in the people who in turn gave him unstinted loyalty and affection. A great organiser and administrator, his statesmanship and tact in solving various problems, his calmness and resoluteness in hours of trial, provided the country with the dynamic leadership it needed at crucial moments. Though, in accordance with his character, he rarely spoke in the House, yet he left a great impact of his personality and his views